अजायब बानी

मासिक पत्रिका

अक्टूबर-2024

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–बाइसवां	अंक–छठा	अक्टूबर–2024

3 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
भजन गाने का महत्त्व

13 सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
माफी मांगना

25 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से सतसंगियों को एक
संदेश

30 परम सन्त सावन सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
सतसंग की महानता

32 सतसंगों के कार्यक्रमों की जानकारी
धन्य अजायब

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम**
16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039
जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा**
99 50 55 66 71
उप संपादक : **नन्दनी**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 271 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

भजन गाने का महत्त्व

13 मार्च 1994 जयपुर, राजस्थान

परमात्मा सावन–कृपाल का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने दया करके हमें अपना यश करने का मौका दिया है। वही प्रेमी भजन बोलने की कोशिश करें या हाथ खड़ा करें जिन्होंने संगत में प्रेक्टिस की हो क्योंकि उनके पीछे संगत ने भी बोलना होता है। पश्चिमी प्रेमियों के लिए इन भजनों की महानता और भी बढ़ जाती है क्योंकि उन्हें बार–बार प्रेक्टिस करने का और उच्चारण करने का मौका मिलता है।

मैं बताया करता हूँ कि **भजन गाने का महत्त्व** होता है क्योंकि ये भजन कमाई वाले महात्माओं के लिखे होते हैं, ये भजन उनके पवित्र हृदय की कल्पना होती है। ये भजन उनकी पवित्र जुबान और पवित्र चितवनी से निकले होते हैं। भजन गाना यश करने का मौका होता है क्योंकि हमारा मन ऐसी नम्रता दिखाने नहीं देता कि हम इतने कमजोर हो गए हैं, इतने गरीब हो गए हैं अगर हम सतगुरु के सामने यह कहें कि आप कुलमालिक हैं, सच्चे पातशाह हैं तो वे हमारे इन लफ्जों को पसंद नहीं करते।

मेरा व्यक्तिगत तजुर्बा है, एक बार परमात्मा कृपाल चारपाई पर बैठे थे और मैं उनके सामने कुर्सी पर बैठा था, मुझे अच्छी तरह याद है कि जब मैंने उन्हें 'सच्चे पातशाह' कहा तो उन्होंने मेरा कान पकड़कर मरोड़ दिया। मैं जब उनके सामने बैठकर भजन बोलता तो कई बार उनकी आँखों से पानी भी बह जाता था। वे एक–एक लफ्ज के साथ उंगली हिलाते थे कि यह ठीक है। मैं उन भजनों में उन्हें सच्चे पातशाह, कुलमालिक, परमात्मा, करन–कारण और मेरे अंदर जो कमियां थीं वह भी मैं उनके आगे बहुत प्यार से बताता था और वे सुनते थे। **भजन गाना** सेवक के लिए अपने गुरु की बढ़ाई करने और नम्रता जाहिर करने का एक मौका होता है।

मैंने दिखावे के तौर पर कभी भजन नहीं बोले थे, ये मेरी आत्मा की आवाज होते थे जो वे प्रेरित करके खुद ही अंदर से निकलवाते थे। मैं जो कुछ बोलता था वह अंदर से ही बोलता था, दिखावे का नहीं बोलता था। वे मेरी अंदर की बात को और आत्मा की तड़प को अच्छी तरह जानते थे।

मैं बताया करता हूँ कि उन्हें हमारे प्यार की जरूरत नहीं होती, हमें उनकी दया प्राप्त करने की बहुत जरूरत होती है। वे तो अपने गुरु के प्यार में मस्त होते हैं। जब उनके आगे खड़े होकर मेरी आत्मा से आवाज निकलती थी तो वे अपने गुरु के प्यार में मग्न होकर आँखों से पानी बहाते थे।

कबीर साहब कहते हैं, ''घायल की बात को घायल ही जानता है।'' गुरु नानक देव जी कहते हैं, ''रोगी की बात को रोगी ही गौर से सुनता है।'' जो खुद प्यार में डूबा होता है उसे ही सतगुरु के प्यार की कद्र होती है और वह प्यार की आवाज पर खुश होता है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि मेरा नाम कौन जानेगा? हम तो सिर्फ धरती पर रहने वाले सतसंगियों को ही जानते हैं। उनकी लाखों सखियां एक से एक सुंदर होती है, उनकी सखियां अंदर भी होती हैं जो उन पर हमसे कहीं ज्यादा मस्त होती हैं, जिन्हें दर्शनों का ही आहार मिलता है।

मेरे जेहियां तैनूं लक्खीं प्यारेया।

मेरी सदा ही उनके आगे यही आवाज निकली कि मुझे अंदर बाहर संसार में आप जैसा एक भी नहीं मिलेगा। अंदर भी वही है जो हमें बाहर अपने साथ जोड़ता है। मेरे जैसी तो लाखों–करोड़ो आपको ढूंढती फिरती हैं लेकिन मुझे आप जैसा कोई भी नहीं मिलेगा।

सन्त उस स्वरूप की हमेशा ही महिमा करते हैं। जब हम उनके दर्शन नहीं करते तो हमारी हालत पागलों जैसी हो जाती हैं। बेशक दुनिया में कितने भी सुंदर क्यों न हों, हम ज्यादा से ज्यादा परियों को सुंदर कहते हैं लेकिन वह परियों से भी सुंदर होते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैंः

मेरे गुरु का दरस कोई देखे, हो जावे हूर परंद री।

जब सेवक अपने अंदर उस स्वरूप को प्रकट कर लेता है, उसे एक बार उस स्वरूप की झलक मिल जाती है तो वह उसे किसी भी कीमत पर छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता। लाखों सूरज–चन्द्रमा भी वहां शर्मिन्दा होते हैं।

यह आश्रम की बात है, इंग्लैंड से एक लड़की आई थी, उसकी जाड़ में बहुत दर्द था वह बहुत परेशान थी। मैं ऊपर से उतरा, उसका ख्याल गुरु की तरफ टिका हुआ था, मसला तो ख्याल टिकने का ही है। उसे बहुत अच्छे दर्शन प्राप्त हुए। उसके बाद वह कई दिन आश्रम में रही, वह जब भी मिलती थी यही कहती कि मुझे वे दर्शन फिर से हो जाएं।

प्यारेयो, वह स्वरूप हमारे अंदर है। हम जब भी उनके सामने बैठें, अपने दिल से दिल की राह बना लें, वह आँख बना लें जिससे वह दिखते हैं। हर सतसंगी का अपना–अपना बर्तन है, हम अपनी–अपनी किस्मत के मुताबिक प्राप्त करते हैं। गुरु एक शीशे की मिसाल होते हैं, हम जैसा चेहरा शीशे में देखते हैं वैसा ही दिखाई देता है, शीशे में नुख्स नहीं होता मसला तो यह है कि हमारा चेहरा कैसा है।

पहले तो मैं अपने पिता से गुरबानी सुनता रहा क्योंकि वे सुबह से शाम तक बानी बहुत पढ़ते थे। हमारे घर में गुरबानी का काफी प्रचार था। पिताजी भाईयों से भी गुरबानी बहुत पढ़वाते थे। वह तुक यह थीः

सजण मुखु अनूपु अठे पहर निहालसा।
फिरदा कितै हालि जा डिठयु तां मन ध्रापिआ।।

बचपन में मेरा अपने पिता से यह सवाल था कि इस तुक का क्या अर्थ है, किसका मुँह आठों पहर देखते रहें? मेरे पिता ने कहा, ''इसका अर्थ तो मैं तुझे नहीं बता सकता, मैं तो बस यह बानी पढ़ता हूँ।'' फिर मैंने खुद इस तुक की बहुत रटना लगाई और कई भाईयों से भी पूछा लेकिन इसका जवाब वही दे सकता है जिसके अंदर ऐसे गुण हों।

प्यारेयो, परमात्मा कृपाल ने अंदर आत्मा की आवाज सुनी और एक दिन खुद ही दया करके आए। आत्मा तो बचपन से रोज ही पुकारती थी कि आप कहीं हैं तो मिलें? दुनियावी तौर पर मैंने उन्हें न देखा था और न उन्हें बुलावा भेजा था। यह उनकी दया ही थी कि उन्होंने बहुत लम्बा रास्ता तय करके इस गरीब आत्मा को सहारा दिया।

प्यारेयो, यहां बहुत से प्रेमी बैठे हैं जिन्होंने महाराज कृपाल के दर्शन किए हैं। हर बंदे का अपना-अपना बर्तन होता है, अपनी-अपनी ग्रहण शक्ति होती है। जैसा-जैसा जिसका ख्याल और बर्तन था उसने वैसा-वैसा देखा। मुझे अच्छी तरह याद है कि एक प्रेमी को नाम मिला, महाराज जी ने उसे दो-तीन बैठकें दी लेकिन उसका कर्म ऐसा ही था क्योंकि हमें अपने कर्मों के मुताबिक ही अनुभव होता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मियाँ-बीवी को भी एक जैसा अनुभव नहीं होता क्योंकि दोनों के एक जैसे कर्म नहीं होते।'' सैंकड़ो

आदमियों में से ऐसे थोड़े ही निकले जिन्हें कोई अनुभव नहीं हुआ लेकिन वह ऐसा जीव था जिसे महाराज ने दो बैठकें दी वह फिर भी यही कहे कि जब तक आप हाथ रखते हैं तब तक प्रकाश आता है फिर हट जाता है।

जब हम प्रेमियों को नामदान पर बिठाने लगे तो मैंने उस समय प्यार भरे लहजे में महाराज जी से विनती की, ''महाराज जी, मैंने इन्हें क्या समझाना है अगर आज आप इन पचास जीवों को खुला दर्शन दे दें तो ये भरपूर हो जाएंगे। मंदिर–मस्जिद का झगड़ा खत्म हो जाएगा, इन्हें पता लगे कि हम सचमुच भगवान के पास आ गए हैं।''

महाराज जी बहुत गर्म लहजे में बोले, ''तू लोगों से मेरे कपड़े न फड़वा, मैं जो कहता हूँ वह कर।'' अब वह प्रेमी हमेशा ही सतसंग में आता है, यहां भी आया है अच्छा प्रेमी है, सिफत के काबिल है लेकिन वह आज भी उस वक्त को याद करता है कि मैंने भगवान को बाहर आँखों से देखकर भी ऐतबार नहीं किया, मैं कितनी भूल में रहा। प्यारेयो, यह अपने–अपने बर्तन की बात है।

शुरु में जब ऑबराय साहब आश्रम में आए जिस प्रेमी ने उस समय यह नजारा देखा था उस प्रेमी का ऑबराय साहब से मिलाप हुआ तो ऑबराय साहब ने उससे पूछा, ''तू महाराज जी का नामलेवा है, उस समय की कोई बातचीत बता जब सन्त जी महाराज जी के पास थे।'' उस प्रेमी ने हँसकर कहा, ''मैं आपको क्या बताऊं ये तो उस समय सबके लिए विनती कर रहे थे कि आप सबको अपना खुला दर्शन दें जो आप हैं, आपने पर्दा क्यों डाला हुआ है?'' तब महाराज जी ने गर्म होकर कहा, ''तू लोगों से मेरे कपड़े न फड़वा।''

महाराज जी गंगानगर में सतसंग देकर आए। हालांकि मुंशी राम पुराना सतसंगी है वह महाराज जी के काफी नजदीक भी रहा है। कुछ दिनों बाद उसने हमारे बचन सिंह (मस्ताना जी) से पूछा कि अब महाराज जी

सतसंग देने के लिए कब आएंगे? उसने कहा, ''हम आपको क्या बताएं? कृपाल अजायब पर आशिक है यह तो अब उनकी मौज है कि वह महाराज जी को कब बुलाते हैं अगर वे अंदर से बुलाएं तो बाहर से बुलाए बिना भी महाराज जी आ सकते हैं।''

मैं बताया करता हूँ कि मैं उनके देखने को समझता था या वे मेरे देखने को समझते थे। हिन्दुस्तान में और कोलम्बिया में भी आँखों में काजल डालने का रिवाज है कि आँखें सुंदर लगें। जब मैं छोटा था तो हमारी माता जी कहा करती थी कि बेटा काजल तो हर औरत डाल लेती है लेकिन झाँकना किसी–किसी को ही आता है। गुरु की तरफ भी किसी पवित्र आत्मा को ही झाँकना आता है।

प्यारेयो, अगर हर एक को उस तरह का झाँकना आ जाए या वैसी आँख बन जाए तो काजल डालकर गुरु को रिझाने की जरूरत नहीं पड़ती तब उस आत्मा का आँसू उसकी आँखों का काजल बन जाता है, उसे पता है कि गुरु की तरफ किस तरह देखना है। जब हजरत बाहु को अंदर और बाहर एक जैसा स्वरूप दिखा तो उन्होंने अपनी मुबारक जुबान से कहाः

ऐह तन मेरा चश्मा होवे, मैं देख देख न रज्जा हू।
लूं लूं दे मुड़ लख लख चश्मा, इक खोलां इक कज्जा हू।।
इतन्या डिट्ठयां सब्र न आवे, मैं होर किते वल भज्जां हू।
मुर्शिद दा दीदार बाहु, मैंनु लख करोड़ा हज्जां हू।।

जब यह भजन लिखा गयाः

सावन दयालु ने रिमझिम लाई, तूं मौसम रंगीले च, आ के तां देख।

उस वक्त पप्पू को इसकी ट्रांसलेशन करने में बहुत दिक्कत आई

मैं भर–भर नैणा दे जाम पिला दूं, तूं इक वारी नजरां मिला के तां देख।

पप्पू ने कहा कि यह कैसे हो सकता है? मैंने हँसकर कहा, ''अफसोस है कि मुझे शादी–शुदा को समझाना पड़ रहा है, तुझे अभी वह जाम

पिलाया नहीं होगा इसलिए तुझे पता नहीं।'' प्यारे बच्चो, औरत के पास ऐसी कौन सी चीज है जो इस मातलोक में इंसान उनके पीछे दिवाने हुए रहते हैं, स्वर्गों में भी देवता देवियों के पीछे दिवाने हुए फिरते हैं। वह कौन सी चीज है जो आकर्षित करती है? वह आँख है। आँख ही आँख को आकर्षित करती है लेकिन आँख से वही काम लेता है जिसकी आँख बन जाए। पत्नी आँख से काम लेती है कि किस तरह पति को रिझाना है फिर उसका पति जिंदगी में कभी दूसरी तरफ ख्याल तक नहीं करता क्योंकि उसकी आँखों में वही रूप समा जाता है।

इसी तरह जब शिष्य की आँख बन जाती है, उसे एक बार मन मोहनी मूरत मिल जाती है, आँखों को संतोष आ जाता है तो वह और किसी की तरफ आँख उठाकर नहीं देखता क्योंकि दुनिया में ऐसा कोई सुंदर नहीं होता। कबीर साहब ने अंदर के दर्शनों की महिमा करते हुए कहा हैः

नैनों अंतर आंव तू, नैन साँपि तोहि लेंव। ना मैं देखौं और को, ना तोहि देखन देवं।।

हे मालिक, हे गुरुदेव अगर आप एक बार मेरी आँखों में आ जाएं तो मैं आँखें बंद कर लूं। न मैं आपको किसी और को देखने दूं, न मैं दुनिया के किसी जीव को ही देखूं।

मुझे परमात्मा सावन और परमात्मा कृपाल के चरणों में बैठने का मौका मिला है। मैं उन प्रेमियों को देखता रहा हूँ जो उस समय प्रेक्टिस करते थे, जैसे ही उनका ध्यान टिकता वे आँखें बंद कर लेते कि मैं इस स्वरूप को पकड़ लूं। इसमें पश्चिम या हिन्दुस्तान के प्रेमियों का सवाल नहीं। जो प्रेमी गर्दन झुकाकर बैठ गए या उन्हें नींद आ गई या वे इधर-उधर झाँकते हैं, उनकी वह आँख नहीं बनी होती, वे जैसे आए वैसे ही चले जाते हैं। बहुत से ऐसे भी आते हैं जो दर्शनों की झोली भरकर ले जाते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि जब हम संगत में आएं तो हमें यह भी पता न लगे कि हम कहां बैठे हैं? आपका ध्यान गुरु के चेहरे

में माथे पर टिका होना चाहिए। चाहे गुरु उस समय किसी से बात कर रहे हों, पाठी पाठ कर रहा हो तो भी हमारा ध्यान उस तरफ नहीं जाना चाहिए। हमारा मकसद तो उस समय दर्शन करने का है। फिर वे यह भी कहा करते थे कि जब आपकी आँखें दर्शनों से भर जाती हैं तो उस समय आप जल्दी से लोगों से बातचीत न करें। आप जितनी बातें करेंगे आपका हृदय दर्शनों से खाली होता जाएगा। आप उस समय अभ्यास में एक घंटा जरूर लगाएं ताकि आपको दर्शनों का लाभ हो सके। आप भजन बोलते हैंः

ओ अक्ल के अंधे देख जरा, तैनूं सतगुरु दित्तिया अक्खियां ने।

सतगुरु ने तुझे आँखें दी हैं। आप उस भजन में यह भी पढ़ते हैं कि एक आँख मोती से तुलती है और एक आँख कौड़ी के मुल्य के बराबर भी नहीं। हम यह भजन भी बोलते हैंः

ओह सोहणा ऐनां सोहणा सी।

उन्हें देखते थे तो चाँद चढ़ता था, हमारा मन उनके दरबार में मोतियों के आँसू जड़ता था। उनके माथे का तेज देखकर चाँद, सूरज भी शरमाकर नहीं चढ़ते थे। प्यारेयो, जिन्हें दर्शनों की झलक मिल जाती है, जिनकी आँखें खुल जाती हैं, वे आँखें बन जाती हैं, उनके दिल से दिल की राह बन जाती है। वे ही जानते हैं कि हम उसी प्रेक्टिस में लगे हुए हैं। हमारे ऊपर भी परमात्मा कृपाल दया करें। वे हमेशा ही दया करते हैं लेकिन हमने उस दया को प्राप्त करने के लिए बर्तन बनाना है।

महाराज जी कहानी सुनाया करते थे कि कोई ऊँट पर सवार लैला के शहर जा रहा था। मजनूं लैला का आशिक था, वह उसके साथ बातें करता गया कि तू लैला से यह कहना, वह कहना। इस तरह वह उसके साथ बारह मील तक दौड़ता गया, जब सामने शहर दिखाई दिया तो उसे पता लगा कि मैं इतनी दूर आ गया हूँ। जब एक बंदा दुनियावी इश्क के

लिए इतनी मशक्कत कर सकता है कि ऊँट के साथ इतनी दूर दौड़ सकता है फिर भी उसका लैला को संदेश देने का किस्सा खत्म नहीं हुआ।

यही हालत इस गरीब आत्मा की है कि भजन की कोई ऐसी बात चली जिससे महाराज कृपाल की बात याद आई, मिलाप की याद आई कि उनका कितना तेज था, वह कितने सुंदर थे, कितने प्रकाशमान थे, दिल को खींचते थे, उनकी आँख मोती के साथ तुलती थी। इस गरीब आत्मा की हालत भी मजनूं वाली थी। कहानी छेड़ते हुए समय का भी पता नहीं लगा कि आज प्रेमियों की भजनों की बारी है या हमारा समय हो गया है।

सच्चाई तो यह है कि उनकी बातें करके अभी भी दिल अंदर से भरा नहीं। प्यास खत्म नहीं हुई दिल करता है कि उनकी याद की और भी किस्से–कहानियां बोलते रहें, अब समय हो गया है।

वे यह भी कहा करते थे कि किसी ने आकर कहा मियाँ मजनूं रब तुझसे मिलने के लिए खड़ा है। मजनूं ने कहा कि लैला बनकर आ जाए मैं मिल लूँगा। किसी ने राँझा को ताना मारा कि तू इतना बड़ा तख्त हजारा देश छोड़कर इनकी भैंसों को चराता है, तूने कभी हीर को देखा है, हीर तो काली है। राँझा ने कहा कि तुम मेरी आँखों से देखो, दुनिया को हीर की आधी शक्ल दिखाई देती है, मैं हीर की पूरी शक्ल देखता हूँ।

तख्त हजारा सचखण्ड है। राँझा 'शब्द' देह धारण कर हमारी आत्मा हीर से विवाह करने के लिए आता है। हीर को उसके घरवाले दूसरे आदमी के साथ भेजना चाहते थे लेकिन हीर उस आदमी पसंद नहीं करती थी, वह आदमी हीर को यम दिखाई देता था। जब आत्मा को उसका पति राँझा मिल जाता है तो यम उसका क्या बिगाड़ सकते हैं? वह राँझा 'शब्द' यह नहीं देखता कि यह औरत है या मर्द है, यह पश्चिम का है या पूर्व का है, यह काला है या गोरा है। वह तो अपनी आत्मा को ही पहचाना है, आत्मा को अपने साथ जोड़कर तख्त हजारा सचखण्ड ले जाता है। ***

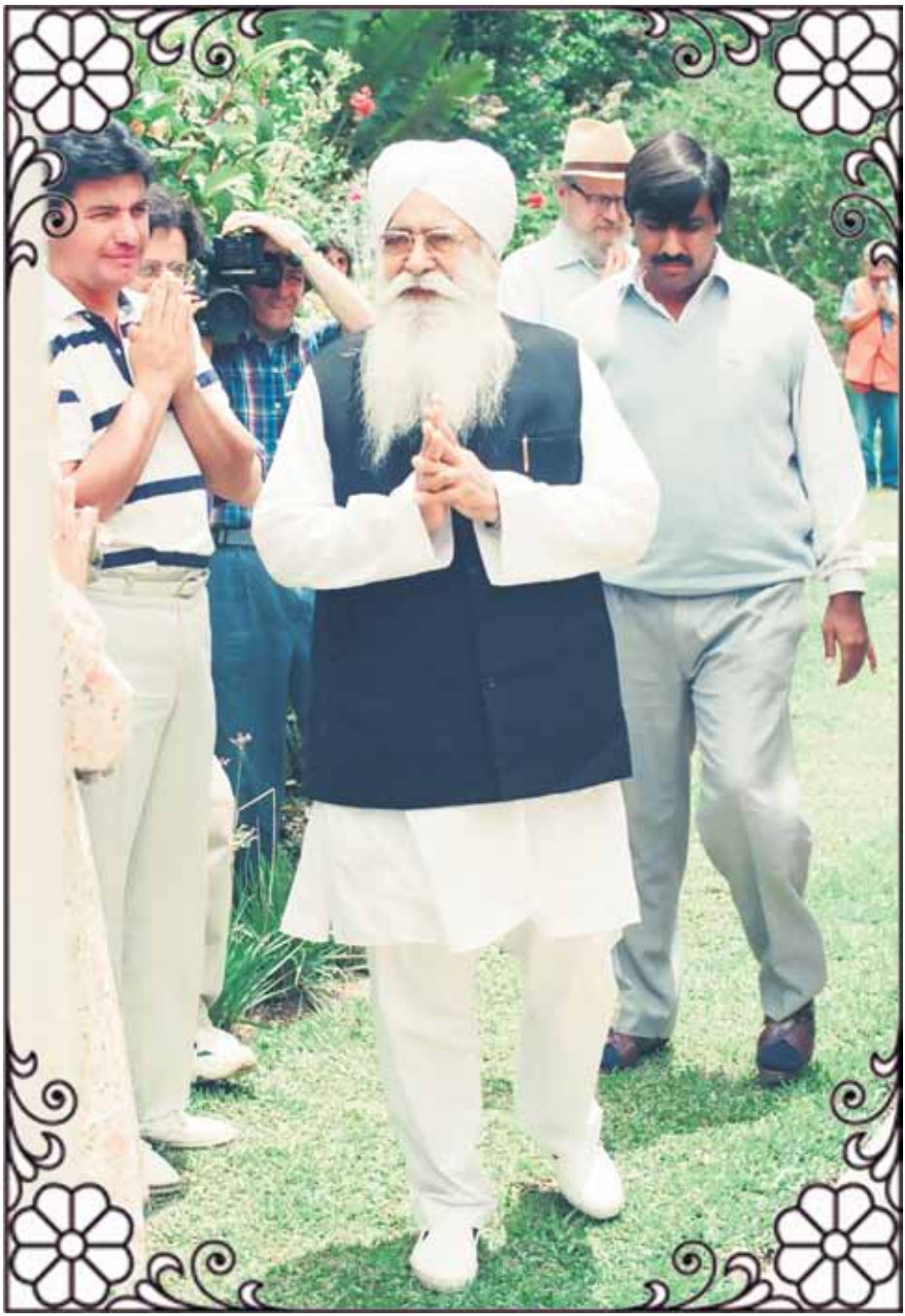

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

माफी मांगना

18 मार्च 1994 | हुजूर स्वामी जी महाराज की बानी | साँपला(हरियाणा)

परमपिता परमात्मा सावन कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया। प्यारेयो, प्रेमी यह शब्द पढ़ रहे थे:

अजायब कृपाल तों मंगलै माफी।

माफी मांगना सबसे मुश्किल है, हम जुबान से तो माफी मांगते हैं लेकिन दिल से माफी नहीं मांगते अगर सच्चे दिल से माफी मांगी जाए तो हमारे जन्म-जन्मांतरों के सब पाप-ऐब साफ हो जाएंगे। सच्चे दिल से **माफी मांगना** भजन-सिमरन से भी उत्तम है। सच तो यह है कि सन्तों के आने का मिशन सिर्फ जीव को माफी के लिए तैयार करना ही होता है। सन्त जीव की बांह पकड़कर परमात्मा के सामने करते हैं कि यह आपका भूला हुआ जीव आपसे **माफी मांगने** के लिए आया है।

परमपिता परमात्मा कृपाल कहा करते थे कि परमात्मा सर्व समर्थ और सबके मालिक हैं अगर आपने उनसे मिलना है तो नम्रता और दीनता लेकर जाएं क्योंकि उन्हें दीनता की जरूरत है, वे किसके आगे दीन हों? माफी मांगने का मतलब इतना ही होता है कि हम आगे के लिए लकीर पार न करें, इसका नाम **माफी मांगना** है। अगर एक दिन तो माफी मांग ली और अगले दिन फिर वही काम करते हैं तो यह माफी नहीं, मजाक होता है।

अन्त समय में जब महाराज सावन सिंह जी शारीरिक तौर पर बीमार थे तो उस वक्त वे महाराज कृपाल सिंह जी से यह शब्द सुना करते थे- *गुरु मैं गुनहगार अति भारी।* उनकी बीमारी भी हम जीवों के ही कर्म थे क्योंकि सन्त तो कर्मों से बरी होते हैं, वे कर्मों का हिसाब-किताब देने के लिए नहीं आते बल्कि हमें कर्मों की कैद से छुड़वाने के लिए आते हैं।

आज भी अनेक आत्माएं गवाही देती हैं कि सावन–कृपाल हमारी संभाल करने के लिए आते हैं। कई प्रेमियों को नामदान के वक्त भी दर्शन होते हैं लेकिन कुल मालिक सावन अपने पूर्ण गुरु के आगे गुनहगार होकर खड़े हो जाते थे कि आप हमें बख्शें, हम अवगुणहारे हैं।

आमतौर पर हम अपने पाप नहीं देखते, जब देखते ही नहीं तो हम उन्हें छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते क्योंकि हम यह मानने के लिए ही तैयार नहीं कि हम कोई ऐब करते हैं। हम हमेशा दूसरों के ऐब गिनते रहते हैं और एक दूसरे से भी कहते रहते हैं कि इसमें यह ऐब है। सन्त हमें प्यार से कहते हैं कि आप अपने ऐब देखें, दूसरों से गुण प्राप्त करें और गुण ग्रहण करने की आदत डालें। स्वामी जी महाराज ने कहा था:

दोष पराया देख करि, चले हसंत हसंत।
अपने याद न आवई, जा का आदि न अंत।।

गुरु साहब कहते हैं:

मंदा जाणै आप कउ अवरु भला संसारु।।

कबीर साहब कहते हैं:

कबीर सभ ते हम बुरे हम तजि भलो सभु कोइ।
जिनि ऐसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ।।

प्यारेयो, सब सन्त परमात्मा से मिले हुए, परमात्मा रूप और ऐबों से रहित थे लेकिन वे हम भूले हुए जीवों को सिखाने और समझाने के लिए आए थे कि यह दुनिया दम मारने की नहीं। हमें इंसानी जामें का मौका परमात्मा की भक्ति करने के लिए मिला है इसलिए सबके साथ प्यार करें।

आपके आगे स्वामी जी महाराज का नम्रता भरा शब्द रखा जा रहा है। आप इस शब्द में कहते हैं, ''हे गुरु, मैं बहुत गुनहगार हूं, आपकी शरण में आया हूं। आप मेरे ऊपर रहम करें, मुझे बख्श दें।''

गुरु मैं गुनहगार अति भारी। गुरु मैं गुनहगार अति भारी।
काम क्रोध और छल चतुराई, इन संग है मेरी यारी।

शिष्य एक–एक करके अपने ऐब गुरु के सामने बताता है कि मैं कामी हूं। मैंने अपनी स्त्री पर तो क्या सब्र करना था, पराई स्त्रियों पर जाकर भी हवस पूरी करता हूं। मेरे अंदर छल है और दूसरों को धोखा देना मेरे लिए मामूली बात है, छल–कपट और काम से मेरी दोस्ती है, मेरा प्यार है।

लोभ मोह अहंकार ईर्षा, मान बड़ाई धारी।

अब आप कहते हैं, ''मैं लोभी हूं, मेरे अंदर ईर्ष्या है, मैं किसी की तरक्की देखकर बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं जहां भी जाता हूं सिर्फ आदर–मान ही चाहता हूं।''

कपटी लम्पट झूठा हिंसक, अस अस पाप करा री।

अब आप कहते हैं, ''मैं कपटी, हिंसक और लोभी हूं, मुझमें बहुत असाध्य रोग है।'' असाध्य रोग उसे कहते हैं जिसका कोई ईलाज न हो। असाध्य रोग से भाव इतना ही है कि हम अपने ऐब उस वक्त ही गिनते हैं, जब अंदर जाकर सच्चाई को देख लेते हैं और सच्चे शिष्य बन जाते हैं। पहले कभी भी हम इन्हें बताने के लिए तैयार नहीं होते बल्कि इनके ऊपर पर्दा डालते हैं कि हम तो बहुत अच्छे महात्मा हैं, बहुत अच्छे सतसंगी हैं।

दुख निरादर सहा न जाई, सुख आदर अभिलाष भरा री।

आप प्यार से कहते हैं, ''अगर हमारे ऊपर थोड़ा सा भी दुख आ जाए तो हम बहुत विलाप करते हैं लेकिन हम किस तरह बेजुबान जानवरों पर दिन–रात तलवार चला रहे होते हैं। हे गुरु, मुझसे दुख और निरादर सहे नहीं जाते। जब मेरे अपने कर्मों का कोई दुख आकर टूटता है तो मैं आपके अंदर ही नुक्स निकालना शुरू कर देता हूं।''

एक बड़ी हंसने वाली बात है, मेरे पिछले गांव का काफी पुराना वाक्या है। वहां एक अच्छा जमींदार था, उसके अच्छे मकान थे और हर किस्म के साधन थे। जब उसका अंत समय आया, बेशक उसे मौत का देवता दिखाई नहीं दे रहा था फिर भी वह रोते–कुरलाते हुए मौत के देवता से कह रहा था कि हमारे गांव में जो गरीब है, उसके घर में कुछ नहीं है, तू उसके घर जा। मैंने रहने के लिए इतने अच्छे मकान बनाए हैं, तूने मुझसे क्या लेना है? कहने का भाव हम मौत को भी कहते हैं कि तू दूसरों के घर जा, हमारे इतने अच्छे मकान हैं, हम इनमें आराम से रह रहे हैं।

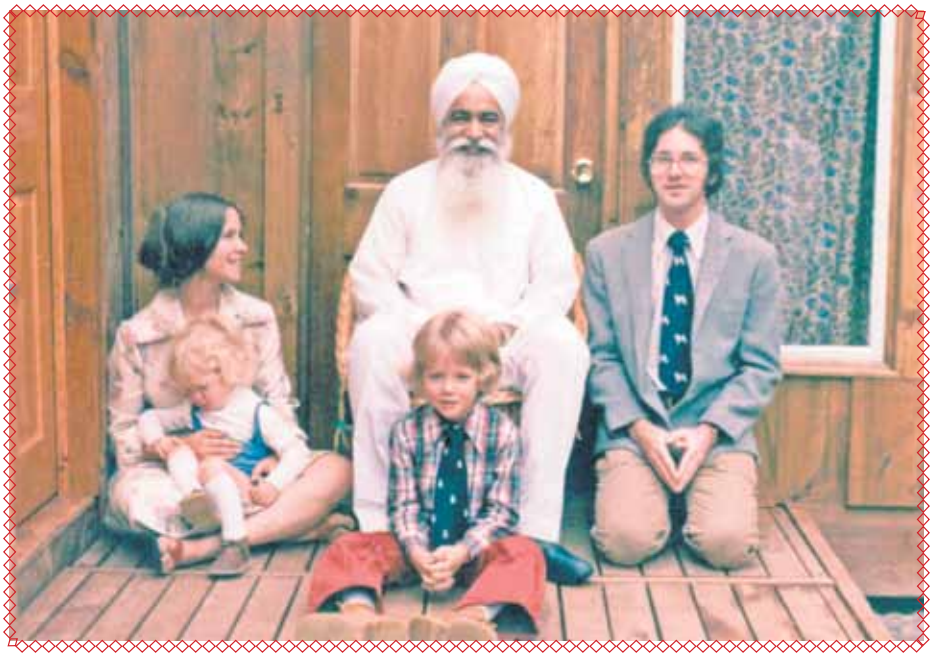

बिंजन स्वाद अधिक रस चाहे, मन रसना यही चाट पड़ा री।

व्यंजन अच्छे खाने को कहते हैं। आप कहते हैं, ''मुझमें यह भी ऐब है कि मुझे अच्छा खाना खाने की आदत है। मैं अच्छा खाना खाकर बहुत खुश होता हूं, जीभ और भी अच्छे स्वादों में लगी हुई है।''

मुझे अपनी जिंदगी में कई खाने के स्वादुओं को देखने का मौका मिला है। आप उनके आगे कितने भी प्रकार का अच्छा खाना परोस दें, वे खाना खाएंगे भी, खाने की निंदा भी करेंगे और बर्तन भी तोड़ेंगे की यह क्या बनाया है, यह खाना अच्छा नहीं बनाया। ऐसे लोग जिनका रस अच्छे खानों में है, क्या वे लोग भजन कर लेंगे? शिष्य गुरु के आगे प्रार्थना करता है, ''हे सतगुरु, मुझे इन खानों का चस्का भी बहुत लगा हुआ है।''

धन और कामिन चित्त बसाये, पुत्र कलित्तर आस भरा री।

पश्चिम में और अब तो हिन्दुस्तान में भी कोई खास फर्क नहीं रहा लेकिन जिस वक्त यह बानी लिखी है, उस वक्त और आज भी चूल्हा चौका संभालना, बच्चे पालना औरत का काम है। मर्द का काम उसे कमाई करके खिलाना है चाहे वह जहां से मर्जी लाए। अब शिष्य गुरु के आगे प्रार्थना करता है, ''हे गुरुदेव, मैंने सारी जिंदगी पत्नी और बच्चों को अपना समझा। इनके लिए मैंने कितनी बेअरामी सही और कितनी बेईमानियां की। मैं इनका गुलाम बनकर रह गया कि मैं इनके लिए धन कमाऊं, इन्हें धन इकट्ठा करके दूं।''

नाना विधि दुख पावत पापी, तो भी यह करतूत न छांड़ी।

आप कहते हैं कि पत्नी या बच्चों से भी सुख नहीं मिला बल्कि उनसे दुख–मुसीबतें और ताने–मेहणे ही मिले फिर भी यह मन अपनी करतूत नहीं छोड़ता उसी तरफ जाता है और उनसे मोहब्बत करता है।

प्यारेयो, जब मैं टूर पर बगोटा, कोलंबिया गया तो वहाँ एक प्रेमी ने बताया कि मेरे चौबीस बच्चे हैं लेकिन मुझसे कोई प्यार नहीं करता, सारे ही थप्पड़ मारते हैं। मैंने उससे कहा कि मैं तुम्हें इसकी क्या दवाई बताऊं? इसी तरह शमस आश्रम में मुझे एक प्रेमी ने अपना दुख बताकर कहा कि मेरे बारह बच्चे हैं लेकिन कोई भी मुझसे प्यार नहीं करता।

यह मन दुष्ट काल का चेरा, नित भरमावत निडर हुआ री।

अब शिष्य गुरु से कहता है कि महाकाल तो मौत के वक्त एक बार ही पास आता है लेकिन काल का दूत मन मुझे नित्य ही वहम–भ्रम में डालकर बैठा है। यह निडर हो गया है, पाप करने से नहीं डरता।

जब जब चोट पड़ी दुक्खन की, तब डर डर कर भजन करा री।

अब शिष्य गुरु के आगे फरियाद करता है कि जब कभी बीमारी या कोई और कष्ट आ जाता है, तभी मैं डरकर थोड़ा–बहुत भजन करता हूँ। कबीर साहब कहते हैं:

दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय।।
सुख में सुमिरन ना किया, दुख में कीया याद।
कह कबीर ता दास की, कौन सुनै फरियाद।।

देखो दया मेहर सतगुरु की, उसी भजन को मान लिया री।

आप प्यार से कहते हैं कि सतगुरु दया के रूप होते हैं अगर सेवक बीमारी से डरता हुआ उन्हें थोड़ा बहुत याद करता है, भजन करता है फिर भी गुरु उसे बख्श देते हैं कि चलो, इसने कुछ तो भजन किया ही है।

बुधि चतुराई बचन बनावट, हार जीत की चरचा धारी।

आप कहते हैं कि मेरी बुद्धि चतुर है, मैं लोगों के साथ बहसबाजी करता हूं। हम लेक्चरारों को देखते हैं कि वे वचनों के साथ एक–दूसरे से मुर्गों की तरह लड़ते हैं। हिन्दू सिखों में नुक्स निकालते हैं, सिख हिन्दुओं में नुख्स निकालते हैं और मुसलमान ईसाइयों में नुख्स निकालते हैं अगर दो फिरके इकट्ठे हो जाएँ तो वचनों का युद्ध शुरू हो जाता है। एक कहता है कि मैं इसे हरा लूं, दूसरा कहता है कि मैं इसे जीत लूं।

हम सब एक ही परमात्मा के बच्चे हैं, हम सब उसी नूर और प्रकाश से पैदा हुए हैं और आत्मा करके हम सब भाई–बहन हैं। जिसे यह समझ आ जाए कि हम सब उस प्रकाश से पैदा हुए हैं, हम सबका परमात्मा एक है तो क्या कोई किसी के साथ लड़ेगा या जिद्द करेगा? कबीर साहब कहते हैं:

एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे।।

गुरु अर्जन देव जी महाराज कहते हैं:

एकु पिता एकस के हम बारिक ।

शेखी बहुत प्रीत नहिं अंतर, भोले भक्तन धोख दिया री।

अब आप कहते हैं कि हे गुरु, मुझमें एक और बड़ा ऐब है, मेरे अंदर शेखी मारने की बड़ी आदत है। शेखी उसे कहते हैं, जिसके अपने अंदर कोई गुण न हो, खुद उतना पहुंचा हुआ न हो और भोले–भाले भक्तों को पीछे लगा लेना कि मैं पूर्ण महात्मा हूं, मैं आपको परमात्मा से मिला दूंगा। इससे बड़ा और कौन सा गुनाह है?'' गुरु साहब कहते हैं:

आत्मघाती महा पापी।

अगर खुद की पहुंच न हो और खुद वहां न पहुंचा हो लेकिन लोगों से दावा करता हो कि मैं वहां पहुंचा हुआ हूं और आपको भी वहां पहुंचा दूंगा। ऐसे महात्मा के लिए गुरु नानक साहब कहते हैं:

नानक ते नर असलि खर जि बिनु गुण गरबु करंत।।

जिनमें कोई गुण नहीं होता और लोगों को महात्मा बनकर दिखाते हैं, असल में वे गधे होते हैं।

नर नारी बहुतक बस कीन्हे, मान प्रतिष्ठा भोग किया री।

आप कहते हैं कि मुझमें यह भी ऐब है कि मैं किसी समाज का लीडर बनकर भोली–भाली जनता को अपने पीछे लगा लूँ। जब लोग मेरी वाह–वाह करते हैं, मेरा जुलूस निकालते हैं तो मुझे बहुत रस आता है और बहुत खुशी प्राप्त होती है।

गुरु संग प्रीत कपट कुछ डर की, कभी थोड़ी कभी बहुत किया री।

अब शिष्य कहता है कि हे गुरु जी, मुझमें यह भी एक बड़ा ऐब है कि मैं कभी–कभी कपट की प्रीत कर लेता हूं। भजन नहीं किया, सतसंग में नहीं गए तो शायद गुरु गुस्सा न हो जाएं, कोई कष्ट न आ जाए इसलिए मैं कभी थोड़ा तो कभी ज्यादा गुरु को याद कर लेता हूं लेकिन यह भी ऊपर–ऊपर से ही याद करता हूं।

कहं लग औगुन बरनूं अपने, याद न आवत भूल गया री।

हे गुरुदेव, मैं अपने अवगुण क्या बयान करूं जितने मुझे याद थे, उतने मैंने बता दिए। मेरे अंदर और भी बेशुमार ऐब हैं जो मैं भूल गया हूं।

चोर चुग़ल इन्द्री रस माता, मतलब की सब बात विचारी।

अब शिष्य कहता है कि हे गुरुदेव, मुझे चोरी और चुगली करने की आदत है। मैं कौन–कौन से ऐब बताऊं, मैं बहुत एबों से भरा हुआ हूं। जहां दुनिया का कोई मतलब दिखता है, मैं वहीं जाकर बैठ जाता हूं।

खुद मतलबी निर्दई मानी, बहुतन का अपमान किया री।

हे गुरुदेव, मैं मतलबी हूं, मैंने बहुतों का अपमान और निरादर किया है।

कोटिन पाप किये बहुतेरे, कहूं कहां लग वार न पारी।

मेरे ऐबों और पापों का कोई अन्त नहीं, मैंने करोड़ों ही गुनाह किए हैं।

हे सतगुरु अब दया विचारो, क्या मुख ले मैं करूं पुकारी।

आप कहते हैं, ''मेरा वह मुंह ही नहीं बना जिससे मैं आपके दर पर प्रार्थना कर सकूं। इतना ही सुना है कि गुरु गरीब नवाज़ होते हैं, मैं पापी जीव आपके दर पर आया हूं, आप मुझ पर रहम करें।''

नहिं परतीत प्रीत नहिं रंचक, कस कस मेरा करो उबारी।

हे गुरुदेव, मेरे अंदर आपकी प्रतीत नहीं। मैं दिन–रात इस चिंता में लगा रहता हूं कि आप मेरा किस तरह उद्धार करेगें क्योंकि मेरे अंदर कोई गुण नहीं है, अवगुण ही अवगुण हैं।

मो सा कुटिल और नहिं जग में, तुम सतगुरु मोहिं लेव सुधारी।

आप प्यार से कहते हैं, ''संसार में मेरे जितना कोई गुनहगार इंसान नहीं है। आप पूर्ण गुरु हैं, मुझ पर दया–रहम करें।''

जतन करूं तो बन नहिं आवत, हार हार अब सरन पड़ा री।

हे गुरुदेव, ''मैंने बहुत यत्न करके देखे जप–तप किए, जलधारे किए, धूने तपाए और जंगलों–पहाड़ों में भी फिरा लेकिन मेरा कोई यत्न आज तक कारगर नहीं हुआ। मैं आपको प्राप्त नहीं कर सका इसलिए मैं आपकी शरण में आया हूं कि आप मुझे बख्शें और मुझ पर रहम करें।''

यह भी बात कही मैं मुंह से, मन से सरना कठिन भया री।

अब आप प्यार से कहते हैं कि यह भी मैंने मुंह से ही कहा है कि मैं आपकी शरण में आया हूं लेकिन मन फिर भी नहीं मानता। मन अंदर से किसी और तरफ फिरता है। गुरु नानक देव जी कहते हैं:

सीसि निवाइऐ किआ थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि।।

सरना लेना यह भी कहना, झूठ हुआ मुंह का कहना री।

हे गुरुदेव, ''मुंह से कहना सब झूठा है। मैं कहता जरूर हूं कि मैं आपकी शरण में आया हूं, आप मुझ पर रहम करें।''

तुम्हरी गति मति तुमहीं जानो, जस तस मेरा करो उबारी।

हे गुरुदेव, ''आपकी आप ही जानें, मैं आपकी गति को क्या समझ सकता हूं। अंधे की क्या ताकत है कि वह सुजाखे को पकड़ ले। मैं सब आसरे छोड़कर आपके दरबार में आया हूं, आप मेरा उद्धार करें।''

मैं तो नीच निपट संशय रत, लगे न चरनन प्रीत करारी।

हे गुरुदेव, मैं नीच और कपटी हूं, मेरी प्रीत आपके चरणों से नहीं लगती, आप मुझ पर रहम करें।

मेरे रोग असाध भरे हैं, तुम बिन को अब करे दवा री।

मेरे असाध्य रोग हैं, संसार में इन रोगों का कोई वैद्य नहीं, आप ही मेरे वैद्य हैं, आप मेरे ऊपर दया–मेहर करें।

प्यारेयो, डॉक्टर शरीर को तंदुरुस्ती तो दे सकते हैं लेकिन कोई डॉक्टर जन्म–मरण का रोग न अपना काट सकता है और न हमारा ही काट सकता है। गुरु साहब कहते हैंः

अउखद आए रासि विचि आपि खलोइआ।।

मरीज पर वही दवाई कारगर होती है, जिसमें परमात्मा मदद करें। जब आखिर वक्त आता है तो डॉक्टर भी जवाब दे देते हैं कि भई, अब कोई दवा नहीं है। मैं भजन में परमात्मा कृपाल के आगे यही फरियाद करता हूँ:

सानूँ जन्म–मरण दा दुःख वे, बण वैद्य रोग नूं चुक वे।

जब चाहो जब छिन में टारो, मेहर दया की मौज निरारी।

आप प्यार से कहते हैं, ''यह आपकी मौज है, जिसका अन्त नहीं पाया जा सकता है। अगर आप अपनी मौज बरसाएं तो पापियों को एक क्षण में ही तार देते हैं। आपकी एक निगाह ही काफी है, हमारी जिंदगी का सवाल होता है।''

बारम्बार करूं मैं बिनती, और प्रार्थना करूं तुम्हारी।

मैं आपके दर पर बार–बार विनती करता हूं कि हे गुरुदेव, ''आप ही रहम करें, आपके रहम के बिना मैं पार नहीं हो सकता।''

तुम बिन और न कोई दीखे, तुम ही हो मेरे रखवारी।

हे गुरुदेव, ''आपके बिना और कोई नहीं दिखता, आप ही मुझे रखने वाले और प्यार करने वाले हैं।''

तूँ मेरा राखा सभनी थाई।।

बुरा बुरा फिर बुरा बुरा हूं, जैसा तैसा आन पड़ा री।

मैं बुरा हूं, बुरों से भी बुरा हूं बेशक कैसा भी हूं फिर भी मैं आपके दर पर आ गया हूं। अब मेरा नाम आपका चेला पड़ गया है।

पुत्र बेशक कुपुत्र हो जाए फिर भी पिता को लाज होती है, पिता उसे घर से नहीं निकलता, गले से लगा लेता है।

अब तो लाज तुम्हें है मेरी, राधास्वामी खेवो बलारी।

हे गुरुदेव, अब मेरी लाज आपके हाथ में है, आपने ही दया करनी है और मुझे अपने दर पर जगह देनी है। आप मेरी लाज रखें, आप ही मुझे बचाने वाले हैं।

आप अपने आपको गुरु–परमात्मा के हवाले कर दें कि हे गुरु, मैं आपके चरणों में आ गया हूं, आप मुझे बख्श दें। मैं भूला हुआ हूं, आगे के लिए मैं कोई गलती नहीं करूंगा। आप दया का समुन्द्र हैं, आप दया करें।

इस शब्द में स्वामी जी महाराज ने खुद एक शिष्य के नमूने में बैठकर हम भूले हुए जीवों के लिए शब्द का उच्चारण किया और हमें बताया कि प्यारेयो, हमारे अंदर क्या–क्या ऐब हैं। हम फिर भी यह कह देते हैं कि हममें कोई ऐब नहीं है, ऐब तो सब दूसरों में ही है। हमें अपने ऐब देखने चाहिए और दूसरों के गुण देखने चाहिए, गुण ग्रहण करने की आदत डालें।

***

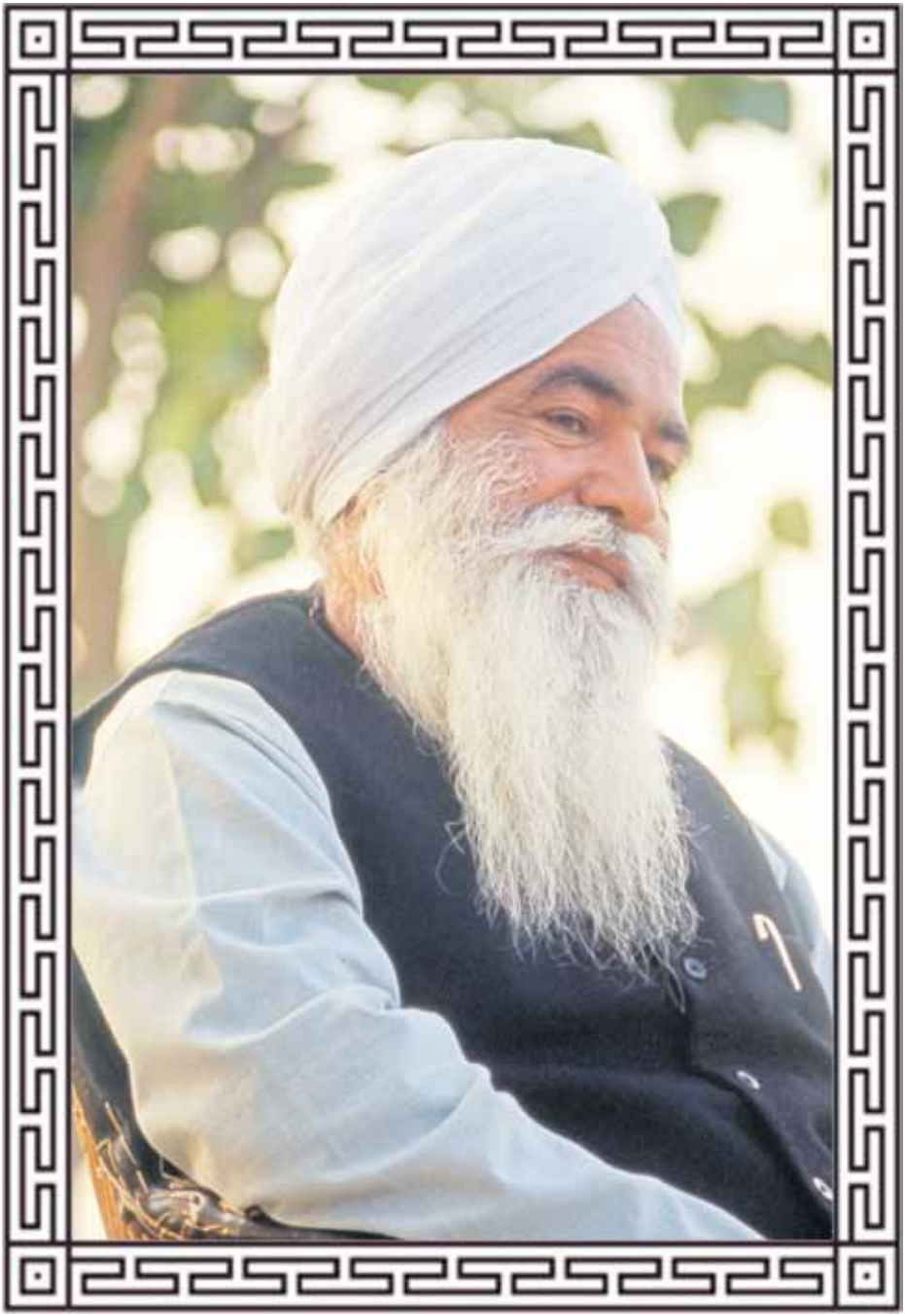

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से सतसंगियों को एक

संदेश

जनवरी 1991 मुम्बई

मैं प्रबंधकों का धन्यवादी हूं जिन्होंने बहुत प्यार बरसाया और सहयोग दिया। सन्त–महात्मा संसार में किसी खास कौम, मजहब या किसी खास मुल्क के लिए नहीं आते, वे सारे संसार को और सब समाजों को अपना घर समझते हैं।

महात्मा की नजर आत्मा पर होती है क्योंकि आत्मा परमात्मा की अंश है। जिस तरह समुन्द्र में से पानी भाप बनकर उड़ता है, बादलों में समा जाता है और जब वही पानी बारिश के रूप में जमीन पर आता है तो जमीन और गंदी जगह का साथ लेकर उसमें से बदबू आने लगती है। पानी सोचता है कि मैं तो गंदगी हूं लेकिन जब इसे सूरज की तपिश मिलती है, यह भाप बनकर उड़ता है, सीधा जाकर बादलों में समा जाता है फिर इसे पता चलता है कि गंदगी कोई और चीज़ थी, मैं कोई और चीज़ था।

इसी तरह हमारी आत्मा तो प्योर और पवित्र थी लेकिन परमात्मा से बिछुड़कर इसने मन का साथ लिया। मन ने इंद्रियों और भोगों का साथ लिया इसलिए यह अति गंदी और मैली हो गई। अब यह अपने आपको अपने असल को भूल गई कि मेरा भी कोई परमात्मा है। दुनिया में आकर इसने मन को अपना मालिक बना लिया और इस बुरे मन के साथ दोस्ती कर ली। यह आत्मा राजघराने की सतनाम की बच्ची थी लेकिन परमात्मा को भूलकर यहां दुनिया में आकर ठोकरें खा रही है।

सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे हमें आकर समझाते हैं कि देखो भई प्यारेयो, हम सारे उस परमात्मा के बच्चे हैं। गुरु नानकदेव जी ने कहा था:

नानक सतिगुरु ऐसा जाणीऐ जो सभसै लए मिलाइ जीउ।।

प्यार और शान्ति का **संदेश** देना सन्त–सतगुरु की ड्यूटी है। सन्त ऐसी आत्माओं के लिए आते हैं जिन आत्माओं का वक्त आ चुका होता है कि अब इन्हें दुनिया के चक्रों में नहीं भेजना, परमात्मा के साथ जोड़ना है।

सन्त हमें बताते हैं कि नाम मुक्तिदाता है, यह सब समाजों का एक ही है। सब धर्मों के लोग मानते हैं कि मुक्ति नाम में है लेकिन हमने कभी शान्त मन से यह नहीं सोचा कि वह नाम क्या वस्तु है, क्या ताकत है? अगर नाम पढ़ने–लिखने में आता तो हम उसे समझ नहीं सकते थे। पढ़ने –लिखने में जितने भी नाम आते हैं वे वर्णात्मक नाम हैं, उन्हें हम जुबान के साथ बोलते हैं लेकिन जो बिना बोली भाषा है, बिना लिखा कानून है वह नाम इन आंखों से देखा नहीं जाता, इन कानों से सुना नहीं जाता और जुबान उसको अदा नहीं कर सकती। उस नाम के साथ तो हमारी आत्मा ने जुड़ना है। सन्त–महात्मा उस नाम का **संदेश** लेकर आते हैं, वे हमें उस नाम के साथ जोड़ते हैं, जिसे गुरु साहब ने कहा हैः

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा।
पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा।।
जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा।
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा।।

इस आवाज को हुक्म कह लें, नाम कह लें। यह प्रभु की आवाज है जो सचखण्ड से उठकर हम सबके माथे के पीछे धुनकारें दे रही है। वहां हिन्दू, मुसलमान या किसी और समाज का सवाल नहीं। औरत–मर्द, अमेरिका, हिन्दुस्तान, अफ्रीका और यूरोप के देशों का या किसी भी मुल्क का रहने वाला क्यों न हो, पांच साल के बच्चे से लेकर सौ साल के बुजुर्ग तक इस नाम से जुड़ सकते हैं। सवाल यह है कि कोई जुड़ा हुआ ही जोड़ सकता है पहलवान ही पहलवानी सिखा सकता है, पढ़ा–लिखा ही पढ़ा सकता है।

अगर हमें इस आवाज से, इस नाम से जुड़ना है तो हमें सबसे पहले उस महात्मा के पास जाना पड़ेगा जिसने जिंदगी में अपना मसला हल

किया होता है। ऐसे महात्मा हमें किताबों से पढ़कर अनुभव नहीं देते उनका अनुभव व्यक्तिगत होता है क्योंकि अनुभव के बगैर हम उसे देख–समझ नहीं सकते। जब हमारा अनुभव खुल जाता है, हमारा संपर्क उस नाम के साथ हो जाता है तो पलटू साहब कहते हैंः

जो कोइ चाहै नाम तो नाम अनाम है।
लिखन पढ़न में नाहीं निअच्छर काम है।।
रूप कहौ अनरूप पवन अनरेख ते।
अरे हाँ पलटू देखत हैं इक सत और सब पेखना।

जिस तरह हम सब परमात्मा की भक्ति के लिए इकट्ठे हुए हैं यह अच्छी बात है। आपके मंदिर में आकर मुझे खुशी हुई, यह जगह भी परमात्मा की बनाई हुई है। हमें यहां बैठकर कोई गंदा ख्याल नहीं सोचना चाहिए क्योंकि अगर हम यहां गंदे ख्याल लेकर आएंगे तो हम यहां से फायदा नहीं उठा पाएंगे। हमारा हक बनता है कि हम यहां नेक ख्याल लेकर आएँ, नेक काम करें, प्रभु को याद करें। हम जिस मकसद के लिए मंदिर बनाते हैं, हमें यहां बैठकर वही सोचना और करना चाहिए।

महात्मा ने ये मंदिर इसलिए बनाए हैं कि हम यहां आकर थोड़ा–बहुत उस मालिक की याद में बैठें अगर हम यहाँ आकर भी घर के कारोबार की बातें करें, किसी की निंदा–चुगली करें तो हम उस मकसद को भूल जाते हैं जिसके लिए हम मंदिर में आए होते हैं।

सन्त–महात्मा हमें बताते हैं कि हमें मंदिर की इज्ज़त करनी चाहिए क्योंकि यहां आकर हमें भक्ति की प्रेरणा मिलती है लेकिन जिस मंदिर में वह जिंदा खुदा, प्रभु–परमात्मा बैठे हैं, वह हमारी देह और वजूद है। वे कुल–परमात्मा हमारी देह के अंदर बैठे हैं। गुरु साहब कहते हैं:

सरीरहु भालणि को बाहरि जाए, नामु न लहै बहुतु वेगारि दुखु पाए।।

अगर कोई देह से बाहर उस परमात्मा को ढूंढता है तो वह बेकार में अपना वक्त खराब कर रहा है क्योंकि परमात्मा तो हमारे अंदर हैं।

परमात्मा चींटी की आवाज पहले सुनते हैं और हाथी की आवाज बाद में सुनते हैं। वे राम–प्रभु सबके अंदर बैठे हैं। वे देखते हैं कि मुझसे मिलने के लिए किसके अंदर तड़प है।

राम झरोखे बैठ के, सबका झारा ले।
जाकि जैसी चाकरी, ताको तैसा दे।।

सन्त–महात्मा बताते हैं कि जिस तरह हमने अपने हाथों से परमात्मा की जगह बनाई हैं, उस जगह की सफाई करते हैं और वहां बुरा वचन नहीं बोलते क्योंकि हम सोचते हैं कि यह जगह प्रभु की याद के लिए बनाई है लेकिन जो मंदिर परमात्मा ने बनाया है, जिस मंदिर के अंदर वे खुद बैठे हैं, हम उसके अंदर कभी मीट–शराब डालते हैं, कभी बुरे कर्म करते हैं। आप ठंडे दिल से सोचकर देखें, गंदी जगह कुत्ता भी बैठने के लिए तैयार नहीं है तो सच्चे–सुच्चे, सचखण्ड में रहने वाले परमात्मा हम शराबी–कबाबियों में आकर कैसे प्रकट हो सकते हैं?

यहां हम सब लोग नास्तिक हो जाते हैं कि मुझे मंदिर जाते हुए इतने साल हो गए, भक्ति करते हुए इतने साल हो गए फिर भी परमात्मा नहीं मिले। सन्त–महात्मा कहते हैं कि देखो भई, परमात्मा का कसूर नहीं यह हमारा अपना कसूर है। सन्त हमें बताते हैं कि परमात्मा की भक्ति अमोलक धन है। भक्ति काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को शांत करने वाली और सुखों की दाता हैं लेकिन हम इस धन को अपने आप प्राप्त नहीं कर सकते। जब तक हम ऐसे महान मालिक के प्यारे के पास नहीं जाते जो इस अमोलक धन को प्राप्त कर चुके होते हैं।

ऐसे महात्मा संसार में बगैर किसी मुआवजे के आपकी सेवा करते हैं। परमात्मा ने सबको गर्मी देने के लिए सूरज बनाया है, सूरज मुफ्त में गर्मी देता है, परमात्मा हर एक को हवा मुफ्त देते हैं। इसी तरह महात्मा भी अपनी तालीम, शांति का जो उपदेश परमात्मा ने उनके जिम्मे लगाया है वह दुनिया में आकर मुफ्त ही देते हैं। कबीर साहब ने कहा था:

नाम रत्न धन कोठड़ी, खान खुली घट माहें।
सेत मेत ही देत हूं, गाहक कोई नाहे।।

इस ऊंची–सुच्ची वस्तु के ग्राहक बहुत कम मिलते हैं। महात्मा जब भी आते हैं, वे खुले दिल से शांति का उपदेश देते हैं, नाम का प्रचार करते हैं, नाम के साथ जोड़ते हैं।

हमें भी चाहिए जो कुछ हम मंदिरों में बैठकर धर्म ग्रंथ पढ़ते हैं, हमें बार–बार पढ़ने चाहिए लेकिन यह भी सोचना चाहिए कि महात्मा ने इनके अंदर क्या लिखा हुआ है और हमने इनसे किस तरह फायदा उठाना है। कबीर साहब कहते हैं:

बेद कतेब कहहु मत झूठे झूठा जो न बिचारै।

वह झूठा है जो वेद–शास्त्रों का कहना नहीं मानता। वेद–शास्त्रों में लिखा है कि आप जागृत पुरुष के सतसंग में जाएँ। वेद–शास्त्रों में नाम की महिमा गाई गई है और इंसान के जामें को उत्तम करके बताया है कि हमें परमात्मा ने यह एक तोहफा दिया है। हम इस जामें में बैठकर परमात्मा के साथ मिलाप कर सकते हैं।

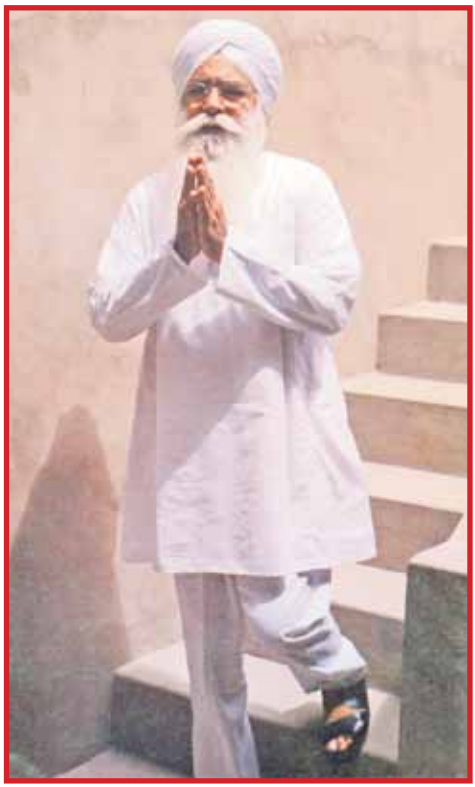

हमें भी चाहिए कि परमात्मा ने हमें जो दिया है, इसका फायदा उठाएं, परमात्मा की भक्ति करें। मैं एक बार फिर प्रबंधकों का धन्यवाद करता हूं। ***

परम सन्त सावन सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

सतसंग की महानता

सन्तों का सतसंग सुनकर मुक्ति का द्वार मिलता है। वेदों में लिखा है कि किसी भी व्यक्ति को सतसंग के बिना सुख और चैन नहीं मिलता। सतसंग बहुत बड़ी दौलत है लेकिन हम सतसंग की कद्र नहीं करते अगर कोई सतसंग का एक शब्द भी अपने अंदर जज्ब कर लेता है तो उसके जीवन में परिवर्तन आ जाता है। पूरे सतसंग की बात तो कुछ और ही है।

एक चोर था, उसने मरते समय अपने इकलौते बेटे को बुलाकर उपदेश के रूप में दो बातें बताई। *एक* – किसी मंदिर में जाकर उपदेश नहीं सुनना। *दो* – अगर चोरी करते हुए पकड़े जाओ तो गुनाह कुबूल मत करना, भले ही तुम्हें फाँसी पर क्यों न चढ़ा दिया जाए।

एक दिन वह नौजवान लड़का किसी घर से चोरी करके लौट रहा था कि उसने एक पुलिसवाले को आते हुए देखा। पास में पगडंडी थी, वह अपनी जान बचाने के लिए भागा। वहां उसे एक मंदिर मिला जिसमें उपदेश दिया जा रहा था लेकिन उसे अपने पिता की सीख याद आई तो उसने अपने कानों में उंगलियां डाल ली कि कोई भी शब्द सुनाई न दे लेकिन कान बंद करने से पहले उसने एक वाक्य सुना कि देवी–देवताओं की परछाई नहीं होती।

किसी और दिन वह नौजवान चोरी के इल्जाम में पकड़ा गया। उसे राजा के सामने पेश किया गया। राजा ने उससे पूछा, ''क्या तुमने चोरी की है?'' उसने कहा, ''मैंने चोरी नहीं की।'' उस नौजवान को मारा–पीटा गया लेकिन उसने फिर भी गुनाह कुबूल नहीं किया। बाद में उसे कैदखाने में डाल दिया गया।

राजा के पुलिस दल में एक बड़ी चालाक महिला थी, उस महिला ने राजा को बताया कि मैं इस चोर से गुनाह कुबूल करवाऊंगी। राजा ने महिला की योजना को मंजूरी दे दी और उसे काम सौंप दिया।

उस महिला ने रात को देवी माँ दुर्गा का रूप धारण किया, दो नकली हाथ लगाए, दो जलती मशालें हाथ में पकड़ी और एक नकली शेर बनाकर उसके ऊपर बैठने का ढोंग रचाकर बहुत हो–हल्ला मचाते हुए चलने लगी। कैदखाने के दरवाजे एक दम से खुल गए और अंधेरे में मशाल की रोशनी से कैदखाना चमक उठा।

उस बेचारे नौजवान ने देखा कि साक्षात देवी माँ दुर्गा उसके सामने खड़ी है तो वह आश्चर्यचकित हो गया और उसके पैरों में गिर गया। उस ढोंगी माता ने नौजवान को आर्शिवाद देते हुए कहा, ''ध्यान देकर सुन! मैं माँ दुर्गा हूँ, मैं तुम्हारी दुर्भाग्यमय स्थिति को खत्म करने आई हूँ। तुमने चोरी की है तो मुझे सच बताओ। अगर मुझसे सच कहोगे तो मैं तुम्हारी रिहाई करवाने में मदद करूंगी।''

वह चोर अपना गुनाह कुबूल करने ही वाला था कि उसने उस ढोंगी देवी माँ दुर्गा की परछाई देखी तो उसे मंदिर में मिले उपदेश का वाक्य याद आया कि देवी–देवताओं की परछाई नहीं होती। वह तुरंत समझ गया कि यह सब ढोंग और दिखावा है। उस चोर ने कहा, ''माते, मैंने कोई गुनाह नहीं किया लेकिन राजा मुझे बेकार में सजा दे रहा है।''

अगले दिन उस चालाक महिला ने राजा से कहा, ''यह नौजवान अपराधी नहीं है।'' राजा ने उस नौजवान की रिहाई का हुक्म जारी कर दिया। चोर बहुत खुश हुआ। उसने सोचा कि यह कितना अच्छा हुआ कि सतसंग का सिर्फ एक वाक्य सुनकर मेरी कैदखाने से रिहाई हो गई अगर मैं पूरा सतसंग सुनूं तो मेरी जिदंगी पलट जाएगी, मेरे जीवन में परिवर्तन हो जाएगा। उसने सतसंग सुनना शुरु किया जिसका नतीजा यह हुआ कि उसने चोरी का धंधा छोड़ दिया और वह महात्मा बन गया। ***

धन्य अजायब

16 पी.एस. आश्रम में 2024 के सतसंगों के कार्यक्रम

1. 4-6 अक्टूबर
2. 1-3 नवंबर
3. 29 नवंबर–1 दिसंबर

मुम्बई में सतसंग का कार्यक्रम

गुरु प्यारी साध–संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया–मेहर से मुम्बई में 8 से 12 जनवरी 2025 तक सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई–बहनों के चरणों में विनम्र निवेदन है कि नीचे लिखे पते पर पहुंचकर सतसंग से लाभ उठाएं।

भूरा भाई आरोग्य भवन

शान्तिलाल मोदी मार्ग (नजदीक मयूर सिनेमा)

कांदिवली (पश्चिम) मुम्बई–400 067

मोबाइल 9833004000

RNI No - RAJHIN/2003/9899